दस में से छह भारतीयों ने विदेशियों द्वारा भारतीय कंपनियों की खरीद का स्वागत किया

दुनिया में सबसे आत्मविश्वासी हम हिंदुस्तानी

सामयिक

दस साल पहले स्वदेशी जागरण मंच ने तिरंगा लहराते हुए टनों आंसू बहाए होते। फ्रांसीसियों ने अब भी सबक नहीं सीखा और लक्ष्मी मित्तल द्वारा आर्सेलर स्टील कंपनी को खरीदने की कोशिश पर भयावह प्रतिक्रिया की। हम जापानियों के साथ इज्जत से पेश आए।

गुरचरन दास

विपक्ष के नेता लालकृष्ण आडवाणी ने 22 जून को मुंबई में कहा कि रैनबैक्सी का जापानी कंपनी के हाथों बिकना राष्ट्रीय हितों के साथ धोखाधड़ी है। उन्होंने यह भी कहा कि हमें सोचना चाहिए कि ऐसे सौदे से सस्ती दवाओं की सुलभता पर कैसा असर पड़ता है। श्री आडवाणी यह मानकर चल रहे हैं कि भारतीय रैनबैक्सी किसी विदेशी रैनबैक्सी की अपेक्षा अपनी दवाएं सस्ते दामों पर बेचेगी। हकीकत यह है कि कीमतों का भारतीय या विदेशी होने से कोई लेना-देना नहीं है। कीमतें बाजार में प्रतिस्पर्धा से निर्धारित होती हैं। भारत जैसे उग्र प्रतिस्पर्धी बाजार में, जहां 97.8 फीसदी दवाएं पेटेंट से बाहर हैं, जब प्रतिस्पर्धी कंपनी एक दवा 20 रुपये में बेच रही हो तो आप अपनी दवा 50 रुपये में नहीं बेच सकते। यही नहीं, हमारे यहां बहुधा इस्तेमाल होने वाली दवाओं पर मूल्य नियंत्रण प्रणाली लागू है।

पिछले कुछ सालों से मुझे रैनबैक्सी के बोर्ड में होने का विशेषाधिकार मिला है और मैंने गर्व के साथ इसे भारत की पहली सच्ची बहुराष्ट्रीय कंपनी बनते देखा है। इसने दर्जन भर अन्य कंपनियों को भी प्रेरित किया जिसके नतीजतन आज भारत में विश्व स्तरीय जेनेरिक दवा उद्योग है। इससे पश्चिम की विशाल कंपनियां डरती हैं क्योंकि यह उनके पेटेंटों को आक्रामक चुनौती देता है। हेल्थकेयर प्रोफेशनल इसकी तारीफ करते हैं क्योंकि यह दुनिया भर में दवाओं की कीमतें कम करने में मदद करता है।

इसलिए जब मालविंदर सिंह ने अपने परिवार की अंशपूंजी जापानी कंपनी दाईची सांक्यो को 10 हजार करोड़ रुपए में बेचने की घोषणा की तो मुझसे कैसी प्रतिक्रिया अपेक्षित थी? मैंने देखा कि मालविंदर का परिवार भी इस घोषणा से चकित था। महीनों चलने वाली बातचीत को वे इतना गोपनीय रख सके, इससे मेरे दिमाग में कंपनी का चरित्र ही प्रबल हुआ। शुरुआत में अलबत्ता मुझे अफसोस हुआ था-भारत की एक बेहतरीन कंपनी जापानी कंपनी की सहायक कैसे बन सकती है। लेकिन गहराई से सोचने पर मुझे लगा मैं गलत था। यह सौदा कंपनी को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में और मजबूत बना सकता है।

आज दुनिया की बड़ी से बड़ी दवा कंपनियां संघर्ष से गुजर रही हैं। उनके पुराने पेटेंट खत्म हो रहे हैं और नई खोजें बेहद दुर्लभ हैं। हेल्थकेयर की बढ़ती लागत के चलते सस्ती जेनेरिक दवाओं का बाजार बढ़ रहा है। तीव्र प्रतिस्पर्धा के कारण रैनबैक्सी जैसी जेनेरिक दवा कंपनियों के मुनाफे में नाटकीय कमी आई है। इसका समाधान यही है कि नई-नई दवाओं की खोज में लगी पुरानी कंपनियां जेनेरिक दवा कंपनियों के साथ विलय कर लें। आज की दुनिया में अकेले लड़ते रहने की बजाय साथ मिलकर लड़ना बेहतर है। यही कारण है कि जापानी कंपनी ने रैनबैक्सी का मूल्य 8.5 बिलियन डॉलर तय किया जबकि उसके शेयर का बाजार मूल्य केवल 5 बिलियन डॉलर था। इसीलिए वह रैनबैक्सी की भावी आमदनी का 35 गुना ज्यादा दे रही है। फिर दोनों अलग-अलग की बजाय साथ मिलकर ज्यादा संपदा पैदा कर सकेंगी। लेकिन एक भारतीय कंपनी को बेचकर संपदा कैसे निर्मित हो सकती है? कंपनियां देश के लिए संपदा तब निर्मित करती हैं जब वे देशवासियों के लिए नौकरियां, शेयरधारकों के लिए लाभांश, सप्लायर के लिए राजस्व और सरकार के लिए टैक्स का निर्माण करती हैं। इन चारों के लिए रैनबैक्सी लाभ निर्मित करती रहती, लेकिन वह कम होता क्योंकि वैश्विक मानदंडों से वह अब भी छोटी और कमजोर कंपनी होती।

2008 का प्यू ग्लोबल सर्वे बताता है कि भारतीय आज धरती पर सबसे ज्यादा आत्मविश्वास से लबालब लोग हैं। इस साल की शुरुआत में 24 बड़े देशों के 24 हजार लोगों से सवाल किए गए। 10 में से 9 भारतीयों ने कहा कि विदेशी व्यापार देश के लिए बहुत अच्छा है या कुछ अच्छा है। 10 में छह भारतीयों ने विदेशियों द्वारा भारतीय कंपनियों की खरीद का स्वागत किया। भारतीयों की यह परिपक्वता 17 सालों तक टिकाऊ आर्थिक सुधारों का ही नतीजा है। हम समझ चुके हैं कि कंपनियों की खरीद-बिक्री दोतरफा गतिविधि है जिससे कंपनियों और राष्ट्रों दोनों की मूल्य वृद्धि होती है।

(लेखक प्रॉक्टर और गैंबल इंडिया के चेयरमैन और एमडी रह चुके हैं।)